Dr. Madan Paswan, History.

Class: B.A. Part-II (H.) P-III rd.

Topic: Balban.

Lecture No. 19.

Date: 11.11.2020

Continue lecture no. of 18.

अपने अधिकार की अवहेलना करने वाले राज्य के बड़ी से बड़ी हस्ती वाले व्यक्ति को भी वह नहीं छोड़ता था। बलबन ने शासन की सुरक्षा के लिए निष्ठावान गुप्तचर प्रणाली की स्थापना की।

बलबन ने अपराध के लिए कठोर दण्ड दिए। बदायूँ के अक्तादार मलिक बकबक का कोड़े मारकर वध कर दिया गया और अवध के इक्तादार को पाँच सौ कोड़े की सजा तथा 20000 टंका जुर्माना देना पड़ा, क्योंकि उन्होंने अपने घरेलू नौकरों की हत्या की थी।

इस प्रकार के अपराधियों के लिए कठोर दण्ड देने का वास्तविक कारण यह था कि वह तुर्क अमीरों की शक्ति नष्ट करना चाहता था। बरनी का कहना है कि —" विद्रोह के अपराध में वह किसी सम्पूर्ण नगर और उसकी सेना को पूर्णतः नष्ट भ्रष्ट कर देता था।" इसके यह कहना कि—

(क) प्रमुख बात यह है कि बलबन की न्यायप्रियता जनसाधारण के झगड़ों में ही अधिक निष्पक्ष और प्रशंसनीय थी। बलबन राजा के पद को एक विशेष स्थान प्रदान करना चाहता था, जो अपनी शक्ति व सत्ता के लिए अभिजात वर्ग पर निर्भर अपनी व्यक्तिगत शक्ति पर आधारित हो।

(ख) सुल्तान की निरंकुशता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा तुर्क अमीर थे। तुर्क अमीर राज्य के महत्वपूर्ण पदों पर आसीन थे तथा सीमांत प्रदेशों पर उनका एकाधिकार था।

अतः इन परिस्थितियों से निपटने के लिए बलबन ने निम्न वर्ग के तुर्कों को महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया और उन्हें 'चहलगा' के समकक्ष स्थान दिया।

(ग) राजा के निरंकुश शासन में अभिजात वर्ग के प्रभुत्व को समाप्त किया डाला। अपनी इस नीति में बलबन पूर्णतः सफल रहा; क्योंकि उसके २० वर्ष के नायब काल में ही 'तुर्कान-ए-चहलगानी' के अधिकांश सदस्य वृद्ध हो गये थे या मर चुके थे।

उसने अपने चचेरे भाई शेर खाँ को विष देकर मरवा दिया, क्योंकि सुल्तान उसकी योग्यता और महत्वकांक्षा के कारण उससे ईर्ष्या करता था। इसके अलावा उसने इल्तुतमिश के परिवार के समस्त सदस्यों की निर्दयतापूर्वक हत्या करवा दी।

Continue...